रात्रीक्लास 1.3.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

बापदादा यहां बैठे हैं। ऐसा कोई मनुष्य सारी दुनियां में नहीं होगा जो बापदादा कहते हों। भल कोई कहते हैं हमारे में ईश्वर है, पढ़ाते हैं ;परंतु बापदादा कोई नहीं कह सकते होंगे। ब्रह्मा है शिवबाबा का एडाप्शन बच्चा। इतने सब ढेर बच्चे हैं। बाबा यहां बैठे बात भी सबसे करते हैं। ऐसा कोई नहीं होगा जो अर्थ सहित बापदादा कहता हो। कहे तो भी यह नालेज दे न सके। तुम बच्चे यह भी समझाय सकते हो माउंट आबू में हमारा बापदादा बैठे हैं। अगर कहते हैं हमारे में परमेश्वर है तो एडॉप्शन किया होगा। यहां तो लिखते भी हैं शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा बाबा। जिसको एडॉप्ट किया उसका नाम बदल दिया। तुम्हारा भी नाम बदल दिया था ना। इनका नाम तो कब बदल नहीं सकता। कब आश्चर्यवत भागन्ती हो न सके। इनको सर्टन है। सभी बच्चे जहां भी जानते हैं हमारा बापदादा है। हम बापदादा द्वारा यह वर्सा लेते हैं। लौकिक बाप भी है फिर पारलौकिक बाप भी है। ऐसा कोई नहीं कहेंगे हमको तीन बाप है। किसकी बुद्धि में न होगा। तुम बता सकते हो प्रजापिता ब्रह्मा भी हमारा बाप है। पारलौकिक बाप भी हमको मिला है। ड्रामाप्लैन अनुसार। ड्रामा अक्षर कोई नहीं जानते हैं। वर्ल्ड का हिस्ट्री–जॉग्राफी एक्युरेट रिपीट होता है। तो ड्रामा ही कहेंगे। यह बेहद का ड्रामा तो बिल्कुल ही एक्युरेट है। उस ड्रामा में तो फिल्म बदली कर दूसरी ज्वायन्ट कर सकते हैं। यह तो अनादि अविनाशी है। यह सृष्टि का चक्र रिपीट करता रहता है। लाखों वर्ष कहते तो भी रिपीट तो करेगा ना। लाखों वर्ष के हिसाब से तो आदमी बहुत हो जावेंगे। अभी हिसाब निकालते हैं इतने हिंदू हैं, इतने मुसलमान हैं। लाखों वर्ष की तो आदमशुमारी बहुत हो जाये। बाप ने समझाया है यह 84का चक्र है। अभी तुम जज करो ठीक है ना। महाभारत लड़ाई अभी2 हुई थी। जास्ती टाइम नहीं हुआ है। मूसलों की लड़ाई 5000वर्ष बाद फिर रिपीट होनी है। दिन प्रतिदिन तुम बच्चों को बाप समझाते रहते हैं। तुम कहते हो हमको आकर पावन बनाओ। फिर पावन दुनियां में ले जाओ। शांतिधाम है आत्माओं के रहने का सीान। वह धाम तो सभी आत्माओं का है। फिर सतयुग सुखधाम भी मानेंगे। फिर वह पुरानी दुनियां होती है। अभी कलियुग आयरन एज है। आत्मा में खाद पड़ने से तमोप्रधान हो जाती है। सतयुग सतोप्रधान को गोल्डेन एज कहा जाता है। अभी तुम बच्चे इन बातों को समझाते हो। नालेज ही सोर्स ऑफ इन्कम है। भक्तिमार्ग में शास्त्र सुनाते हैं। वह भी सोर्स ऑफ इन्कम हो जाती है। सन्यासी उदासी आदि जो भी शास्त्र सुनाते हैं वह भी ड्रामा में नूंध है। फायदा कुछ भी नहीं। करके अल्पकाल का सुख मिलेगा। अभी तुम्हारी तो कमाई है 21जन्मों की। और कोई नहीं होगा जो ऐसे पढ़ता हो। यह है मनुष्य से देवता बनने की बात। गायन भी है ना मनुष्य से देवता किये .....कोई भी साधू–संत, महात्मा कह नहीं सकते हैं हम तमको पढ़ाते हैं। कहते हम भी भगवान हैं। भगवान ने वेद–शास्त्र आदि सुनाई। यह कौन कहते हैं। भगवान ने तो राजयोग की गीता सुनाई जिससे राजा बन गए। बाकी तो एम ऑब्जेक्ट है नहीं। यह लोग वेदांत को ऊपर ले जाते हैं। वास्तव में सर्वशास्त्रमई शिरोमणी गीता ... बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। फिर भी माया विकर्म करा देती है। मन्सा तूफान भल आवे ;परंतु कर्मेन्द्रियों से नहीं करना है। बच्चे समझते भी हैं फिर क्या होता है। बाप कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। ऐसे तो कोई नहीं कहेगा। पतित तो सभी हैं ना। पुनर्जन्म लिया होगा तो इस समय भी तमोप्रधान हैं। पहले नम्बर जो विश्व का मालिक था ह भी अभी तमोप्रधान है। राव और रंक होते हैं ना। सिर्फ वहां सुख यहां दुःख। यह हेल वह हेविन। हेविन तो जरूर देवताएं ही रहते हैं। वहां रावणराज्य ही नहीं। तो दुःख की बात ही उठती। कर्म कूटने भी यहां ही हैं। वहां यह कोई बात ही नहीं। यहां तुम बाप के सम्मुख हो। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं और स्कूल में न आये तो क्या कहेंगे? भगवान फिर बनाते भी भगवान–भगवती हैं।

यहां तो बीमारी में भी लंगड़ाते आते हैं। सेंटर पर कुछ किसको होगा तो आवेंगे ही नहीं। पढ़ाई तो मिस न करनी चाहिए। पहले नम्बरवन को लगभग भगवान–भगवती ही कहेंगे ना। ऊँच ते ऊँच भगवान फिर उनके पीछे विष्णु कहेंगे। इस संगमयुग का तो किसको भी पता नहीं है। हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान तो स्वर्ग स्थापन करते हैं। हम उनके बच्चे हैं तो हम स्वर्ग में मालिक होने चाहिए। सभी क्यों नहीं स्वर्ग में हैं? स्वर्ग में आ जाये तो सारा झाड़ देवताओं का ही बन जाये। इस नालेज को कोई भी कापी नहीं कर सकते। भल कहते हैं हम ईश्वर के प्रेरणा से सुनाते हैं ;परंतु बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाना है। वह कोई नहीं जानते हैं। गॉडफादर का वर्सा है ही उनके घर में जाना। गॉडफॉदर को याद करते2 पाप भी कट जाये और चला भी जाये। और जो भी धर्मस्थापक अपने धर्म में महिमा पाते हैं वह भी आ जावेंगे। होकर गए हो तो भी नेम नहीं। बाप लक्ष्य देते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। कहेंगे यह बात तो ठीक है। लिबरेटर एक है उनको याद करते रहने से ही हमारे विकर्म विनाश होंगे। धर्म स्थापक तो ऊँच पद वाले बनते हैं ना। वह भी आवेंगे ,आकर लक्ष्य ले जावेंगे। गॉड को तो जानते हैं। बाकी उनको याद करना है। सभी आत्माओं का बाप है। ब्रदर्स भी बहुत समझते हैं। सर्वव्यापी भगवान कहने से फादरहुड हो पड़ता। तो उनको कब कापी नहीं कर सकेंगे। तो तुम सिद्ध कर बताते हो। उनका अगर गुरू होता तो गुरू का सिर्फ एक शिष्य होगा क्या? ऐसा तो हो न सके। कहां भी जाओ कब तुमको यह राजयाोग सिखला न सके। कितना रात–दिन का फर्क है। तुम समझते हो यह ईश्वरीय क्लास है। सोर्स ऑफ इन्कम है। कब पढ़ाई मिस न करनी चाहिए। फिर भी मिस कर देते हैं। पूछना चाहिए तुमको राजयोग की शिक्षा मिली फिर घर क्यों बैठ गए हसे? तुम तो कहते थे महाराजा–महारानी बनेंगे फिर कहां हो? ऑफिस बड़ी चाहिए। सारा दिन लिखते रहें चिट्ठियां। हम स्टुडेंट हैं राजयोग सिखेंगे फिर ऐसी पढ़ाई न पढ़ी तो रिमाइंडर भेजना चाहिए। यहां से चिट्ठी जावेगी तो जैसे सुप्रीम टीचर से जाती है। तुम कहते थे फिर क्यों नहीं आते हो? तुम भगवान से पढ़ने नहीं चाहते हो। आप को तो फार्कती दे दी। ऑफिस लिखा–पढ़ी की बहुत बड़ी होनी चाहिए। माया गिराने की कोशिश करती है। चिट्ठी से शायद बच जाये। कुछ न कुछ फायदा होगा ;क्योंकि ...बच्चों को तरस पड़ता है ना। बच्चे सम(झ)ते हैं माया ने कान से पकड़ा हुआ है। अगर मेरे पास कोई राइट हैंड हो तो रखूं। सारा दिन लिखते रहें। जो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा उनको भी चिट्ठी लिखनी चाहिए। कलियुग को स्वर्ग कहा जाता है क्यो? सतयुग जब होगा तब सतयुग में जावेंगे ना। अभी तो कलियुग है। लेटर लिखने की भी प्रैक्टिस चाहिए। अभी देखें बाबा के पास कोई आते हैं। हेड ऑफिस बापदादा से पत्र जाने से कल्याण हो सकता है। ऐसा टापइ राइटर हो जो सब कुकछ जानते हों। हिंदी,सिंधी,अंग्रेजी टाइप सब जानता हो। यह भी बहुतों को जगाने में बहुत फायदा है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। मीठे बच्चों को बाप का नमस्ते। एक बाप ही है जो सबको सुख देने वाला है। बाकी सभी दुःख देने वाले ही हैं। वह हैं ही सुखधाम। यह है ही दुःखधाम। वह शिवालय यह वैश्यालय। भारत की महिमा अपरमअपार है। बाप भी भारत में ही आकर सर्व की सदगति करते हैं। इसलिए भारत अविनशी खंड है। अविनाशी बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं। मुझे कहते ही हैं पतित–पावन आकर पावन बनाओ। मुझे पतित दुनियां में ही बुलाते हैं। पावन दुनियां में थोड़े ही बुलावेंगे। यह भी खेल बना हुआ है। बाबा हंसी में डोरापा देते हैं। मुझे पतित दुनियां में बुलाते हो। पावन दुनियां में तो मुझे भूल जाते हो। याद करने की जरूरत ही नहीं। सतयुग में आऊँ तो फिर पुनर्जन्म ले कलियुग में भी आना पड़े। यह ड्रामा बना हुआ है। मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूं। बाकी तो सभी लेते हैं। अच्छा, ओम।